# उत्तररामचरितम् में चित्रकला के तत्त्व

**डॉ. शशिकुमार सिंह**

उत्तररामचरितम् तो संस्कृत साहित्य में चित्रकला के सुन्दर समावेशन का निदिर्शन भूत नाट्य ग्रन्थ माना जाता है। जिसमें चित्रकला के प्रयोग से की गयी चित्रवीथी की कल्पना ग्रन्थ की नाटकीयता को न सिर्फ परिपुष्ट करती है अपितु नाटक के सम्पूर्ण कथानक को एक दृढ़ आधार प्रदान करती है। कला के अनन्य उपासक, संस्कृत के सुधीसाहित्यकार श्रीकण्ठपदलाञ्छन महाकवि भवभूति की अप्रतिम रचना उत्तररामचरित आठवीं शताब्दी ईसवी में विरचित संस्कृत साहित्य का विलक्षण ग्रन्थ रत्न है। करूण रस को अंगीरंस के रूप में स्वीकार करने वाला यह नाटक कुल सात अंकों में विभक्त है। ग्रन्थ के मंगलाचरण में ही कवि भवभूति कला को नमस्कार कर कला विषयक अपनी श्रद्धा का परिचय देते ही हैं। परन्तु कलाओं में भी चित्रकला के प्रति कविवर भवभूति का अधिक अनुराग प्रतीत होता है क्योंकि ग्रन्थ के आदि अंक (चित्रदर्शन अंक) में महाकवि भवभूति ने चित्रों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग कर ही ग्रन्थयात्रा को प्रस्थान दिया है।